

APPENDICES

| I. DIRECT QUOTATIONS FROM THE NYĀYA WORKS | | | |
|---|---|---|--|
| Ālāmkārikā who quotes and his work | Quotation | Nyāya Work & Naiyāyikā | Remark |
| BHĀRAKA KA. | पृथ्यश्च कल्पना पोद्दुः…… V. 6.2. | तत्र पृथ्यश्च कल्पना लोद्दुः स भ्रातरम्, Nyāyabindu, Dharmakīrti, I. 4. | drops अभ्रातरम् |
| BHOJA Sr.P. | त्रिस्पूपालिङ्गं तो शून्यमनुभावं…… V. 11a. | तत्र रस्यार्थं त्रिस्पूपालिङ्गं द्वायदुनमेव शोनं तद्यनुभावम्, Ibid. II.3. | slightly changes |
| | आत्मशारीरिक्षया अबुद्धिमनः प्रवृत्तिं द्वाघृत्य भावं प्रतिदुःख- पर्वास्तु प्रमेयम् । | Nyāyasūtra of Gautama, I. 1.9. Vol. 4. P. 569. | same |
| | इः इव जन्म प्रवृत्तिं द्वाघृत्याह्वान- ना मुन्त्रै तश्चपाचे नद्यनन्तरा- पायादपवर्त्तः । | Nyāyasūtra I. 1.2 Vol. III, P. 326 | same with Bhāṣya also at length. |

| | | |
|---|--|--|
| ॥ यत्तस्तु चैवं विधारवर्द्धते ॥ परिश्वात्यते । | Vātsyāyana NBh. on Nys. I. 1. 1. | Vātsyāyana same |
| प्रसिद्धसाधन्यात् साद्यसाधनमपमानम् वृत्तिं कुम्हा परकृतिः पराकृत्य इत्यर्थवादः । वृ. IV, p. 453 | Gautama Nys. I. 1. 6. | Nys. II. 1. 64 |
| विधिविद्वतस्यानवचनमनवादः । वृत्तिं प्रतिष्ठामिणि बुद्धयाभधावति ॥ मिद्याहानाविशेषे इपि विशेषासंकृत्यां प्रति ॥ | Nys. II. 1. 65 Vol. IV. p. 456. | Nys. II. 1. 65 |
| BHĀTTA TAUTA ABh. | Dharmakīrti, Pv. p. 118 | Dharmakīrti, Pramāṇavārttika vrtti, p. 39. |

| | | | |
|-------------------------------------|--|--|------|
| ĀNANDAVARDHANA DhA. | कूचत्य दुविदात्यये न आणितः: etc. P. 240 | Dharmakīrti Nyāyaviniśca- yavṛtti, p.30 | same |
| | अनुद्यवसित इति. p.242. | Dharmakīrti, Nyāyabindu, p.12 | same |
| ABHINAVAGUPTA ABh. | यम अभिविक्तं य प्रवर्त्तते तत् प्रयोगलम् Part. I. p. 3. | NyS. I. 1. 24 | same |
| | गीतिषु समारोदया। Part II. p.15 | NyS II. 1. 36. | same |
| KALPALATA VIVEKA KĀRA, viveka | पूर्य शान्तमानिपमानशारदा: प्रभागाति। vol.IV, P. 268 | NBh on NyS. I. 1. 3. reads सर्वा in place of सा। | same |
| | सर्वा कौयं प्रमिति: पूर्यशारदा। vol.IV, P.281 | NyS. I. 2. 18 | same |
| VIVEKA KĀRA, viveka | साधक्येष्वरस्याऽयो त्रयवृथानं जातिः। P. 64 | NyS. I. 2. 10 | " |
| | व-वर्चनविद्यातिः अभिकल्पोऽपपत्था धर्मम्। P. 64. | " | " |

| | | | | | |
|--|--|--|--|------------------------|-----------------|
| MAHIMABHĀTTA VV | मणिप्रदीपप्रभयैः ॥ Ruyyaka Vimarsinī on VV | शारद्याध्येष्टनवचनं पुनरत्कम्मन्यन्ना- न वादात् । ॐ मनि ऋष्या: क्रतिरथ्यमर्थं वा शारदानां प्रतिकृद्धानो न वाद्यवृत्तेन वर्णितः ॥ | Dharmakīrti, PV. P. 118 NYS. IV. 2. 14 II | P. 27 P. 4. 129 | same |
| VISVANĀTHA SD | | अभिकापसंसर्गं श्रीब्रह्मात्मविरहान् एत सत्त्वकाल्पन्नासंवैयः ॥ III. 57. | Nyāyabindu Dharmakīrti I. 526 | P. 339 | with changes |
| PANDITA VIŚVEŚVARA Alankārapradīpa | | आष्टवाक्यं शारदः ॥ | NYS. I. 1. 4 P. 51 | | same |

| III. REFERENCES TO NYĀYA WORKS AND AUTHORS | | |
|--|--|--|
| The Alankārika who refers | Reference | Remarks |
| BHOJA Sr. P | <u>अक्षयादृस्तं सहृदरेण दद्यान तादृश्योऽपि</u> <u>... क्षत्ता मत्यमध्यारप्य गति पुनिश्रिपति ।</u> Vol. II, p. 242. | He refers to Gautama in his discussion on <u>Upacāraवृत्ते</u> . |
| ABHINAVAGUPTA ABh. | <u>निधा च इच्छायत् ... अक्षयादृप्यादृष्टः ।</u> <u>... निधा इच्छायत् ... अक्षयादृप्यादृष्टः ।</u> <u>काशणमत्तम् ।</u> ch. vii, p. 335 | He refers to Gautama in his discussion on <u>Pramāna</u> . He refers to Gautama while discussing <u>śāntarasa</u> . |
| APPAYA DĪKSITA Vṛttivārttikam | <u>नीयाचिकास्त - एकं जाहिशातुर्मुखं वेकं पद्मे</u> <u>... गप्तं जाहिपद्मस्य लक्षणं वा</u> <u>शृगपतान्तोऽया, न त लक्ष्मिं वेकं वा ।</u> p. 5 | He refers to Naiyāyikas in general while discussing the divisions of Padā. |

| | | |
|--|--|---|
| <p>॥ नैयायिका स्तत् - पूर्वि द्विप्राचयः ॥ ... तात्पर्यमिति नावधार्यते ... दन्त्याङ्गः । प. 13</p> <p>RĀJĀŚEKHARA Kāvyamīmāṃsā</p> | <p>पृष्ठविद्धि) प्रामाणिको मीमांसकास्तात्पर्य- कथाच । ch. VIII, p. 36</p> <p>नैयाय वैश्वेषिकीया - स कौ सामाजिक द्वेषवरः कर्ता ? ...</p> <p>NARENDRAPRABHA SŪRI Alamkāramahodā- dhi</p> | <p>He refers to Naiyāyikas in general.</p> <p>He refers to Naiyāyikas in discussion of the import of word.</p> <p>भरत ... चाराक्य वाच्यायना धृ- स्तम्भुति द्वार्थेषु । P. 8 .</p> |
|--|--|---|

| | | |
|---------------------------------|--|---|
| JAGANNĀTHA R.G. | अत राव पड़ुना हि पैदेष्यः । नै आ चिका मूळते । P. 348 | He refers to Naiyāyikas in general. |
| | दृथसौर चारण्यात वादशिरामणि - ०यारण्यातु भवपि । | He refers to Raghunātha Śiromani and his <u>Ākṛyatāvādin</u> his discussion of Upamāśābdā- bodha. |
| DEVASAMĀKARA PUROHITA AM. | नै आ चिका चौः किन्तु पञ्चतीच् अ ए न शूषा न गृह नै जिशा न चारिधान्नापि सरेशवन्द्यः । P. 34 | Example of Anyonyālamīkara Refers to Gautama |
| | तदा तमार्यापनश्चै - द्याय मने ऽस्य शिष्य विषया नैयायिका- नपि किञ्चाचिशोल्यकं लोधार्डिकारात् । P. 42 | refers to Naiyāyikas |

| | | | |
|---|---|--|---|
| ॥ | <u>वृद्धभ्रान्ते शपदा महामने-</u> AM. P. 15. | Refers to Gautama while praising Ramasastri. <u>तात्पर्यटिका भाट्य, श्रीरामाचार्ण-मिश्रकाठी</u> <u>न भ्रान्ता व्याद्यकास्ति विनष्टमेव</u> <u>वद्य लंताय पुकुरः ।</u> P. 20 | He refers to the works— <u>Tātparyatikā,</u> <u>Nyāyabhashya,</u> <u>Dīkhiṭe</u> etc. of Nañgāyikās. <u>तात्पर्यभक्तयोत्ता नाळोचत-</u> <u>शीर्घित महामने व्यायामहः प्रजन्मनि</u> P. 22. |
|---|---|--|---|